ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

ISO 9001 : 2015 QMS
ISBN / ISSN

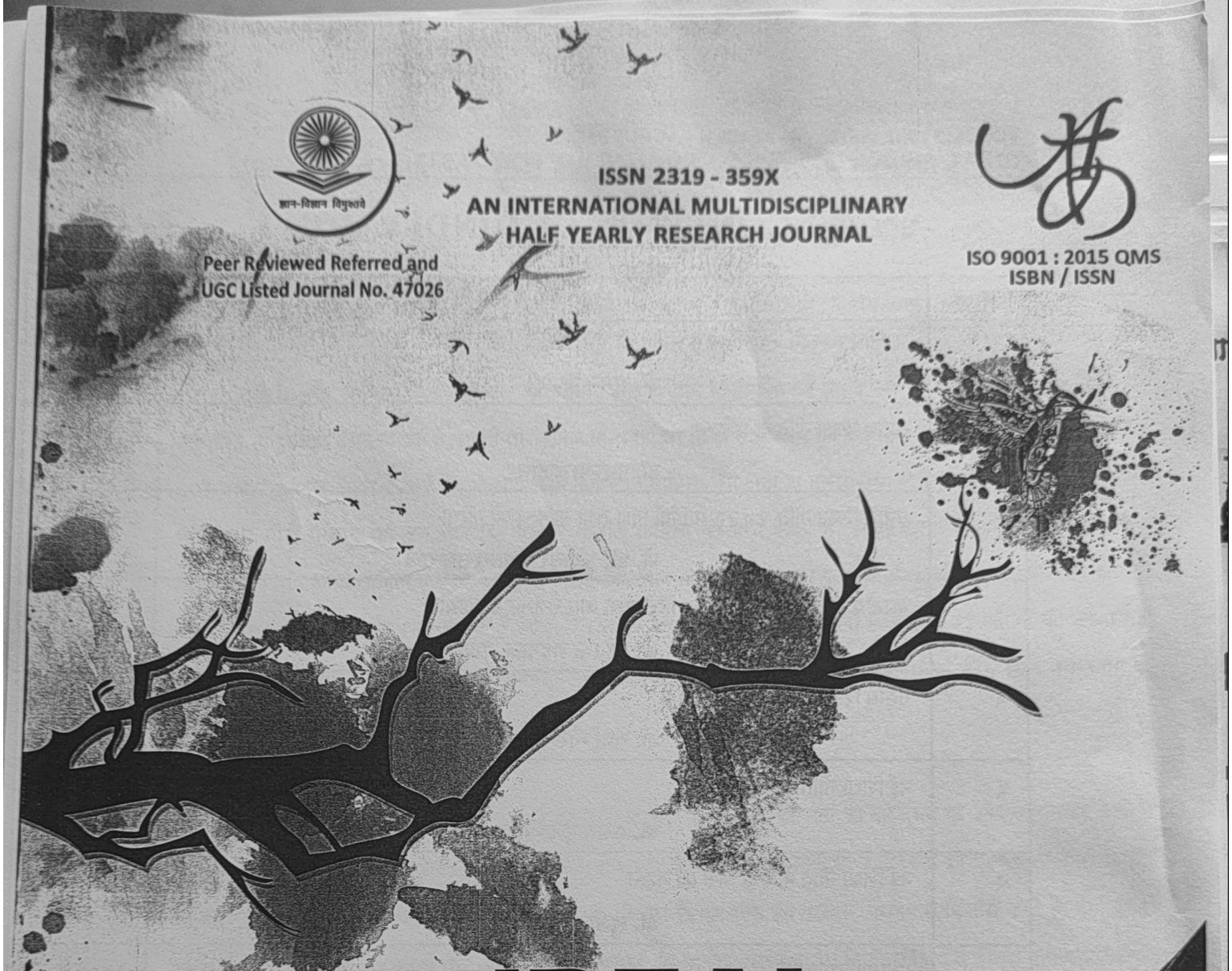

IDEAL

Single Blind Review/Double Blind Review

Volume - XII, Issue - II
March - August - 2024
Hindi Part - I

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Scanned with ACE Scanner

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	भारतीय संस्कृति एवं जीवन में संगीत की भूमिका **डॉ. सुमन त्रिपाठी**	१-४
२	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रयोजन **डॉ. तपस्या चौहान**	५-७
३	राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में हिंदी भाषा तथा साहित्य की गरिमा **प्रो. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे**	८-१४
४	भारतीय शिक्ष नीति - २०२०: हिंदी भाषा और रोजगार के आयाम **डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला**	१५-१८
५	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिंदी भाषा **डॉ. वर्षा मोरे-पावडे**	१९-२१
६	नई शिक्षा नीति और हिंदी **डॉ. वसंत पुंजाजीराव गाडे**	२२-२५
७	नई शिक्षा नीति में हिंदी भाषा का महत्व **डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ**	२६-२९
८	राष्ट्रीय शिक्षणनीति २०२० में १० दिनों की बेगलेस शिक्षानीति : एक अध्ययन **डॉ. कोमल एन. आहिर**	३०-३३
९	एनईपी २०२० में गांधीदर्शन का समावेश **डॉ. पीयूष चावड़ा**	३४-३६
१०	संस्कृत साहित्य में शिल्पकलाएँ **डॉ. दिव्या डी. पटेल**	३७-४१
११	गोमिनी की पाककला : दशकुमारचरित के परिप्रेक्ष्य में **डॉ. विभूति सी. पटेल**	४२-४६
१२	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिन्दी साहित्य **डॉ. एस. एन. भदरगे**	४७-४८
१३	नई शिक्षा नीति और हिंदी में रोजगार **प्रा. संतोष विजय येरावार**	४९-५२

Scanned with ACE Scanner

१२. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिन्दी साहित्य

डॉ. एस. एन. भदरगे
सहयोगी प्राध्यापक, एवं हिन्दी विभाग प्रमुख, हु. ज. पा. महाविद्यालय, हिमायतनगर, जिल्हा-नांदेड.

शिक्षा और संस्कृति किसी भी राष्ट्र के आधार होते हैं। यदि किसी देश को प्रगति उस देश की संस्कृति और शिक्षा पर आधारित है। इसलिए आवश्यकता है, हमारी सांस्कृतिक मान्यताएं जो हिन्दी साहित्य में हमें देखने को मिलती है। उसका जतन हो, यह आवश्यक है। समाज-मंगल के मार्ग पर ले जाने वाला लेखन ही साहित्य कहलाता है। तुलसीदास जी ने भी लिखा है- "कीरति भनति भूति भली सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।" अर्थात् साहित्य का परम लक्ष्य है- लोक कल्याण। हिन्दी साहित्य के कुछ साहित्यकारों और उनके साहित्य को पाठ्यक्रम का हिस्सा अवश्य बनाना चाहिए जिससे युवा वर्ग में भारतीयता, देश-प्रेम, उत्तरदायित्व की भावना, जागरुकता आए। ग्लोबल युग में विश्व-संस्कृति को जानना चाहिए किन्तु अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। नैतिकता बोध के साथ-साथ आधारभूत मूल्यों की शिक्षा- सेवा, सत्य, अहिंसा, निष्काम-कर्म, विश्व-शांति तथा त्याग को भी हमें भूलना नहीं चाहिए।

1. मानवता की भावना

हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है- "पर वह मेरा देश नहीं जो करे दूसरों पर अन्याय।" भारत कभी भी युद्ध की पहल नहीं करता, किन्तु "त्याग हमारा धर्म किन्तु हम हरण कभी न सहेंगे।" मानवता पर दानवता का वरण कभी न सहेंगे। 'जैसे को तैसा' की नीति को भी अपना सकता है यह चेतावनी भी देता है। हालांकि हम परसेवा, परहित में विश्वास करते हैं, परपीड़ा को अधम मानते हैं- "परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।" (तुलसीदास)। हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध नीतिकार रहीम के शब्दों में दुष्टों को जवाब देना जरूरी है- "खीरा सिर ते काटिए, मलियत नौन लगाय। रहिमन कडुए मुखन को चहियत यही सजाय।।"

2. राष्ट्रीयता तथा देशप्रेम की भावना

इसके लिए जरूरी है- राष्ट्रीयता की भावना, देशप्रेम। जयशंकर प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कवियों की कविताएँ इसके उदाहरण के रूप में देखी जा सकती हैं - "अपने अतीत को पढ़कर / अपना इतिहास उलट कर / अपना भवितव्य समझकर/ हम करें राष्ट्र का चिंतन / हम करें राष्ट्र आराधन।" (जयशंकर प्रसाद) "मुझे तोड़ लेना वनमाली, / उस पथ पर देना तुम फेंक। /मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, / जिस पथ जाएँ वीर अनेक।" (माखनलाल चतुर्वेदी) सुभद्रा कुमारी चैहान की 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो वसंत' जैसी कविताएँ राष्ट्रवाद से परिपूर्ण हैं।

3. नारी-सम्मान की रक्षा

आज की सबसे बड़ी समस्या है - नारी-सम्मान की रक्षा। जिस देश में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' तथा 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' की गूँज हो, वहाँ नारी के स्वायत्त की रक्षा चुनौती बन गई है। इस समस्या का हल भी हमें हिन्दी साहित्य में मिल जाता है। त्याग की मूर्ति, सब कुछ सहन कर जाने वाली, दया, ममता, करुणा की पराकाष्ठा, धैर्य, क्षमा, सहिष्णुता के साथ जीवन जीने वाली

Scanned with ACE Scanner